B.A I (Hon's) Account of Madhyamika - Buddhism

Q: बौद्ध - दर्शन के माध्यमिक शून्यवाद की व्याख्या करें।

Give a Critical account of Madhyamika, school of Buddhism?

Ans: बौद्ध - दर्शन का माध्यमिक सम्प्रदाय मुख्य रूप से तत्वशास्त्रीय समस्या का विवेचन करता है। इस संप्रदाय का स्थापना किसके द्वारा हुई है यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। कुछ विद्वानों ने स्वीकार किया है कि नागार्जुन इसके संस्थापक हैं लेकिन इस संप्रदाय का उल्लेख "महायान" सूत्र में देखने को मिलता है, जो इस बात का प्रतीक है कि इसके संस्थापक नागार्जुन नहीं थे। नागार्जुन ने इस संप्रदाय को एक व्यवस्थित रूप देने का प्रयास किया है। इन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना "माध्यमिक शास्त्र" के अन्तर्गत इस संप्रदाय के दार्शनिक विचार को स्पष्ट किया है।

माध्यमिक संप्रदाय के द्वारा स्थापित तत्वशास्त्रीय विचार शून्यवाद के नाम से पुकारा जाता है। जिसका अर्थ लोगों ने यह लगाया है कि यह संप्रदाय वास्तविकता को शून्य के रूप में स्वीकार करता है। किसी भी पदार्थ को वास्तविक नहीं मानता है। शून्य ही एकमात्र वास्तविक है। माधवाचार्य ने अपनी पुस्तक "सर्वदर्शन - संग्रह" के अन्तर्गत इस संप्रदाय के विचार को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय इन तीनों के बीच परस्पर आश्रय का संबंध है। अर्थात् ये तीनों एक-दूसरे पर आश्रित है। एक की वास्तविकता अन्य दो की वास्तविकता पर निर्भर करती है और इन तीनों में से अगर एक भी असत्य हो जाता है, तो अन्य दो आवश्यक रूप से असत्य हो जाते हैं। विभ्रम के अवस्था में ज्ञान का विषय असत्य होता है। उदाहरण के लिए जब हम रस्सी को साँप समझ बैठते हैं, तो यहाँ ज्ञान का विषय ज्ञेय (Object of Knowledge) साँप असत्य है। फलस्वरूप ज्ञाता और ज्ञान दोनों असत्य हो जाता है। इससे यह प्रमाणित होता है, कि जो कुछ भी हम अनुभव करते हैं, वह आभास मात्र है। कुछ भी वास्तविक नहीं है। मानसिक तथा अमानसिक दोनों ही प्रकार के पदार्थ अवास्तविक है। सम्पूर्ण शून्य है।

उपर्युक्त तर्क से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक संप्रदाय "सर्ववैनाशिकवाद" में विश्वास करता है। जिसका अर्थ है कि कोई भी पदार्थ सत्य नहीं है। पाश्चात्य दर्शन में इस सिद्धान्त को Nihilism कहा जाता है। जिसके अनुसार शून्य ही एकमात्र वास्तविक है। लेकिन वस्तुतः माध्यमिक संप्रदाय का दार्शनिक विचार न तो "सर्ववैनाशिकवाद" और न Nihilism है क्योंकि यहाँ वास्तविकता को अस्वीकार नहीं किया गया है बल्कि बाह्य विश्व की वास्तविकता को अस्वीकार किया गया है। वस्तुतः वास्तविकता या सत्य दो प्रकार के होते हैं —

(i) संवृति सत्य तथा (ii) परमार्थ सत्य।

संवृति सत्य के दो प्रकार हैं (i) तथ्य संवृति (ii) मिथ्या संवृति

① तथ्य संवृति - यह वह वस्तु या घटना है जो किसी कारण से उत्पन्न होती है। इसे सत्य मानकर लौकिक लोगों के व्यवहार होते हैं।
② मिथ्या संवृति - यह वह घटना है जो कारण से उत्पन्न होती है परन्तु इसे सभी सत्य नहीं मानते। इसके आधार लोगों का व्यवहार नहीं चलता।

संवृति - सत्य उसे कहा जाता है, जो व्यवहारिक है और परमार्थ सत्य उसे कहा जाता है, जो निरपेक्ष रूप से वास्तविक है। व्यवहारिक जीवन में सफलता के लिए संवृति - सत्य को स्वीकार करना आवश्यक है। विश्व के विभिन्न पदार्थ संवृति सत्य हैं, जिसके आधार (basic) के रूप में परमार्थ सत्य है। अद्वैत वेदान्त के प्रणेता शंकराचार्य ने भी दो प्रकार के सत्य को स्वीकार किया है →

(i) व्यवहारिक सत्य तथा
(ii) पारमार्थिक सत्य।

इन्होंने भी विश्व को व्यवहारिक सत्य के रूप में स्वीकार किया है और ब्रह्म को पारमार्थिक सत्य के रूप में। बौद्ध - दर्शन का विचार और शंकराचार्य का विचार काफी हद तक समान है, और यही कारण है कि कभी - कभी शंकर को प्रच्छन्न बौद्ध (Buddha in disguise) कहा जाता है।

माध्यमिक संप्रदाय यह स्वीकार करता है कि परमार्थ सत्य का वर्णन भाषा के द्वारा संभव नहीं है। अतः यह अनिर्वचनीय है। चूँकि इसके स्वरूप को भाषा के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है। अतः इसे शून्य कहा जाता है। इसप्रकार शून्य के दो पक्ष हैं—

(i) व्यवहारिक तथा (ii) पारमार्थिक।

इसका व्यवहारिक पक्ष प्रतीत्यसमुत्पाद (Dependent Origination) है, जिसके अनुसार विश्व के विभिन्न पदार्थ अपनी उत्पत्ति के लिए एक - दूसरे पर आश्रित हैं। इसका पारमार्थिक पक्ष तत्व कहलाता है। जिसके अनुसार शून्य को छोड़कर अन्य किसी भी पदार्थ को वास्तविक नहीं माना जा सकता है। यह विश्व संवृति सत्य है और शून्य परमार्थ सत्य है। शून्य ही निरपेक्ष सत्ता है। विश्व और निरपेक्ष सत्ता दोनों ही अनिर्वचनीय होगा। विश्व को अनिर्वचनीय इसलिए कहा जाता है कि इसे न तो पूर्ण रूप से सत्य माना जाता है और न पूर्ण रूप से असत्य। यह पूर्ण रूप से सत्य इसलिए नहीं है कि विश्व के विभिन्न पदार्थों का जन्म और विनाश होता है, साथ ही ये परिवर्तनशील होते हैं। लेकिन यह पूर्ण रूप से असत्य भी नहीं है, क्योंकि इसकी प्रतीति (Appearance) होती है जो पूर्ण रूप से असत्य है। उसकी प्रतीति नहीं होती है। इसतरह विश्व सत्य और असत्य से परे होने के कारण अनिर्वचनीय है। निरपेक्ष सत्ता को अनिर्वचनीय इसलिए कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

क्योंकि इसपर बुद्धि की किसी भी धारणा को लागू नहीं किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रत्येक पदार्थ शून्य है। संवृति सत्य स्वभाव शून्य है। अर्थात संवृति सत्य का निजी स्वभाव नहीं होता है, उसका स्वभाव बदलता रहता है। परमार्थ सत्य का प्रपंच शून्य है। अर्थात उसमें अनेकता है, नहीं।

"लंकावतार सूत्र" में इस विश्व के अनिर्वचनीय स्वभाव को प्रमाणित करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि जो वास्तविक है, उसे स्वतंत्र रहना चाहिए। विश्व का कोई भी पदार्थ स्वतंत्र नहीं है। अतः विश्व का कोई भी पदार्थ स्वतंत्र नहीं है। अतः विश्व का कोई भी पदार्थ वास्तविक नहीं है। लेकिन यह आकाश-कुसुम (sky-flower) की तरह अवास्तविक भी नहीं है। क्योंकि आकाश-कुसुम का हमें अनुभव नहीं होता है। लेकिन विश्व के विभिन्न पदार्थों का हमें अनुभव होता है। अतः विश्व न तो वास्तविक है, न अवास्तविक। यह शून्य या अनिर्वचनीय है। निरपेक्ष सत्ता की अनिर्वचनीयता को स्पष्ट करते हुए नागार्जुन ने कहा है, कि यह बुद्धि की चतुष्कोटि धारणा से रहित है। "अस्ति, नास्ति, उभय, अनुभय - इति चतुष्कोटि विनिर्मुक्तम् शून्यत्वम्"।

इसप्रकार से स्पष्ट हो जाता है, कि शून्य को छोड़कर कोई भी पदार्थ वास्तविक नहीं है। नागार्जुन ने निरपेक्ष सत्ता के विषय में यह स्पष्ट कर दिया कि निरपेक्ष सत्ता को आस्तिता या नास्तिता के अन्तर्गत नहीं लाया जा सकता है। "(तत्र आस्तिता व नास्तिता न विद्यते न उपमान्यते)"। अतः हम कह सकते है कि शून्य ही एकमात्र परमार्थ सत्य है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य में शून्य को छोड़कर किसी भी पदार्थ को वास्तविक नहीं कहा जा सकता है। प्रत्येक पदार्थ का स्वभाव शून्य है। इन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—

"the object that We Perceive now were Shunaya in the Past and will be Shunaya in the future. All things in their nature have Shunaya for their essence."

नागार्जुन के इस कथन से यह स्पष्ट है कि शून्य ही एकमात्र वास्तविकता है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य में प्रत्येक पदार्थ का स्वभाव शून्य होता है।

माध्यमिक संप्रदाय के, शून्यवाद के विरुद्ध कुछ आक्षेप उठाये गये है। आलोचकों का कहना है कि अगर शून्य को छोड़कर कोई भी पदार्थ वास्तविक

नहीं है। इसका अर्थ यह हो जाता है कि शून्य के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए माध्यमिक संप्रदाय का तर्क भी अवास्तविक है। अतः यह एक आत्मविरोधी तत्त्व (Self contradictory) है। लेकिन नागार्जुन ने अपनी पुस्तक "विग्रह व्यावर्तनी" के अन्तर्गत इस आक्षेप का उत्तर देते हुए कहा है कि माध्यमिक संप्रदाय यह नहीं स्वीकार करता है कि कोई भी पदार्थ वास्तविक नहीं है। बल्कि यह स्वीकार करता है कि किसी भी सांसारिक पदार्थ को परमार्थ सत्य नहीं कहा जा सकता है। यह विश्व संवृत्ति सत्य है। अतः व्यवहारिक जीवन की सफलता के लिए इसे वास्तविक मानना आवश्यक है। अगर विश्व व्यवहारिक दृष्टिकोण से सत्य है तो शून्यवाद को प्रमाणित करने के लिए तर्क भी तथा तर्क देने वाला व्यक्ति भी व्यवहारिक दृष्टिकोण से वास्तविक है। इसप्रकार शून्यवाद एक आत्मविरोधी (Self- Contradictory) सिद्धान्त नहीं है।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि बौद्ध दर्शन का माध्यमिक संप्रदाय परमार्थ सत्य के रूप में शून्य को स्वीकार करता है, और विश्व को संवृत्ति सत्य के रूप में स्वीकार करता है। संवृत्ति सत्य के आधार के रूप में परमार्थ सत्य का अस्तित्व है और उसी के आधार पर सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या दी जा सकती है।

Scanned with CamScanner